❍ 09 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अपने स्थिति अचल, अडोल बनायी ?*

➢➢ *अपना टाइम विस्तार की बातो में वेस्ट तो नहीं किया ?*

➢➢ *मनसा-वाचा-कर्मणा और समबन्ध-संपर्क में पवित्रता की धारणा की ?*

➢➢ *सम्पूरणता की स्थिति में स्थित रहे ?*

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ ऐसा कोई भी ब्राह्मण नहीं होगा जो आत्म-अभिमानी बनने का पुरुषार्थी न हो। लेकिन निरन्तर आत्म-अभिमानी, जिससे कर्मेन्द्रियों के ऊपर विजय हो जाए, *हरेक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जाए, देह के पुराने संस्कार और सम्बन्ध से सम्पूर्ण मरजीवा हो जाए, इस पुरुषार्थ से ही नम्बर बनते हैं।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं दिलतख्तनशीन आत्मा हूँ "*

〰✧ अपने को सदा दिल तख्तनशीन समझते हो? यह दिलतख्त सारे कल्प में सिवाए इस संगम युग के कहाँ भी प्राप्त नहीं हो सकता। दिलतख्त पर कौन बैठ सकता है? *जिसकी दिल सदा एक दिलाराम बाप के साथ है। एक बाप दूसरा न कोई, ऐसी स्थिति में रहने वालों के लिए स्थान है - 'दिलतख्त'।* तो किस स्थान पर रहते हो? अगर तख्त छोड़ देते हो तो फाँसी के तख्ते पर चले जाते। जन्म जन्मान्तर के लिए माया की फाँसी में फंस जाते हो। या तो है बाप का दिलतख्त या है माया की फाँसी का तख्ता।

〰✧ तो कहाँ रहना है? एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये, अपना शरीर भी नहीं। अगर देह याद आई तो देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया सब एक के पीछे आ जायेंगे। *जरा संकल्प रूप में भी अगर सूक्ष्म धागा जुटा हुआ होगा तो वह अपनी तरफ खींच लेगा। इसलिए मंसा, वाचा कर्मणा में कोई सूक्ष्म में भी रस्सी न हो।*

〰✧ सदा मुक्त रहो तब औरों को भी मुक्त कर सकेंगे। आजकल सारी दुनिया माया के जाल में फँसकर तड़प रही है, उन्हें इस जाल से मुक्त करने के लिए पहले स्वयं को मुक्त होना पड़े। सूक्ष्म संक्लप में भी बंधन न हो। *जितना निर्बन्धन होंगे उतना अपनी ऊंची स्टेज पर स्थित हो सकोगे। बंधन होगा तो ऊँचा चाहते भी नीचे आ जायेंगे।*

*°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

*°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

*°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

*°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ *बापदादा वा ड्रामा दिखाता ही रहता है कि दिन-प्रतिदिन सेवा बढ़नी ही है, तो बैठ कैसे जायेंगे?* जो एक साल पहले आपकी सेवा थी और इस साल जो सेवा की वह बढ़ी है या कम हुई है? बढ़ गई है ना!

〰✧ *न चाहते भी सेवा के बंधन में बंधे हुए हो लेकिन बैलेन्स से सेवा का बन्धन, बन्धन नहीं संबंध होगा।* जैसे लौकिक संबंध में समझते हो कि एक है कर्म बन्धन और एक है सेवा का संबंध तो बन्धन का अनुभव नहीं होगा, सेवा का स्वीट संबंध है। तो क्या अटेन्शन देंगे?

〰✧ सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स सेवा के अति में नहीं जाओ। बस, मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। *कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी।*

*°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सारे दिन में कितना समय फ़रिश्ते हो रहते और कितना समय फ़रिश्तों के बजाय मृत्युलोक के मानव होते हो? दैवी परिवार के रिश्तों में भी फ़रिश्ते नहीं आते। वह तो सदैव न्यारे रहते हैं। *रिश्ते सब किससे हैं? अगर कोई को सखी बनाया तो बाप से वह सखीपन का रिश्ता कम हो जायेगा।* कोई भी सम्बन्ध चाहे बहन का या भाई का या अन्य कोई भी रिश्ता जोड़ा तो एक से ज़रूर वह रिश्ता हल्का होगा। *क्योंकि बँट जाता है ना? दिल का टुकड़ा टुकड़ा हो गया तो टूटा हुआ दिल हो गया। टूटे हुए दिल को बाप भी स्वीकार नहीं करते।* यह भी गुह्य रिश्तों की फिलॉसॉफी है। *सिवाय एक के और कोई से रिश्ता नहीं- न सखा, न सखी, न बहन, न भाई। तो उस सम्बन्ध में भी आत्मा ही याद आयेगी। फ़रिश्ता अर्थात् जिसका आत्माओं से कोई रिश्ता नहीं। प्रीत जुटाना सहज है, लेकिन निभाना मुश्किल है। निभाने में ही नम्बर होते हैं। जुटाने में नहीं होते।* निभाना किसी-किसी को आता है, सब को नहीं आता। निभाने की लाइन बदली हो जाती है। लक्ष्य एक होता है लक्षण दूसरे हो जाते हैं। इसलिए निभाते कोई-कोई हैं, जुटाते सब हैं। *भक्त भी जुटाते हैं लेकिन निभाते नहीं हैं। बच्चे निभाते हैं, लेकिन उसमें भी नम्बरवार।* कोई एक सम्बन्ध में भी अगर निभाने में कमी हो गई या सम्बन्ध में ज़रा-सी कमी हुई, मानों ७५३ सम्बन्ध बाप से है और २५३ सम्बन्ध कोई एक आत्मा से है, तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं रखेंगे। बाप का साथ ७५३ रखते हैं और कभी-कभी २५३ कोई का साथ लिया तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं आयेंगे। निभाना तो निभाना। यही भी गुह्य गति है। *संकल्प में भी कोई आत्मा न आये- इसको कहते हैं सम्पूर्ण निभाना। कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे मन की, तन की या सम्पर्क की- कोई भी आत्मा संकल्प में न आये। संकल्प में भी कोई

आत्मा की स्मृति आई तो उसी सेकेण्ड का भी हिसाब बनता है। तभी तो आठ पास होते हैं। विशेष आठ का ही गायन है।* ज़रूर इतनी गुह्य गति होगी। बड़ा कड़ा पेपर है। तो फ़रिश्ता उनको कहा जाता है जिसके संकल्प में भी कोई न रहे। कोई परिस्थिति में, मजबूरी में भी नहीं। सेकेण्ड के लिए संकल्प में भी न हो। मजबूरी में भी मजबूत रहे- तब है फ़रिश्ता।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- आत्मा का स्वधर्म शांति है, स्वधर्म में टिकना है"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकांत में बैठ चिंतन करती हुई स्व की गहराइयों में उतरती जाती हूँ... मैं ज्योतिबिन्दु स्वरूप आत्मा भृकुटि के सिंहासन पर चमकती हुई मणि हूँ... इस देह में अवतरित होकर अपना पार्ट बजाने वाली स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ... मैं आत्मा और गहरे उतरती जाती हूँ... *अंतर्मुखी होकर गहरी शांति का अनुभव करती हुई शांति के सागर प्यारे बाबा के पास पहुंच जाती हूँ...*

❉ *शांति के सागर मेरे प्यारे बाबा शांति की किरणों से सराबोर करते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... स्वयं को देह समझ शांति के लिए बहुत बाहर भटक चके हो... अब अपने सच्चे वजद के नशे में गहरे डब जाओ... और

भीतर मौजूद शांति का गहरा आनंद लो... *शांति का खजाना भीतर सदा साथ है, स्वधर्म है, बस परधर्म छोड़ अपने स्वधर्म में खो जाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा गले मे शांति का हार पहन स्वधर्म में टिकती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... *मैं आत्मा आपसे पाये ज्ञान के तीसरे नेत्र से, स्वयं के खजानो को देखने वाली नजर को पाकर निहाल हो गयी हूँ...* प्यारे बाबा मै शांति की बून्द भर को भी प्यासी थी... आपने तो मेरे भीतर समन्दर का पता दे दिया और मुझे सदा के लिए तृप्त कर दिया है..."

❊ *मीठे बाबा दुख, अशांति की दुनिया से निकाल शांति के समंदर में डुबोते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... जब घर से निकले थे कितने गुणवान और शक्तियो से श्रंगारित थे... आत्मिक भान से परे, देह होने के अहसास ने सारे प्राप्त खजानो से वंचित कर दिया... *अब अपने आत्मिक स्वरूप की स्मृतियों में हर साँस को भिगो दो... और असीम शांति की तरंगो से स्वयं और पूरे विश्व को तरंगित कर दो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अतीन्द्रिय सुख, शांति की अनुभूति में डूबकर कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा शांति के सागर से मिलकर गुणो के सौंदर्य से खिल उठी हूँ...* प्यारे बाबा आपने मुझे मेरी खोयी खुशियां लौटाकर, मुझे मालामाल कर दिया है... हर भटकन से मुक्त कराकर गुणो के वैभव से पुनः सजा दिया है... और अथाह शांति के स्त्रोत को भीतर जगा दिया है..."

❊ *प्यारे बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख सर्व ख़ज़ानों के वरदानों की बरसात करते हुए कहते हैं:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... अपने दमकते हुए मणि स्वरूप की खुमारी में डूब जाओ... और सुख शांति से लबालब हो जाओ... ईश्वर पिता से पाये गुणो और शक्तियो के खजानो का जीवन में भरपूर आनन्द लूटते हुए... सतयुगी दुनिया के सुखो को बाँहों में भरो... *सच्ची शांति जो भीतर निहित है उससे जीवन को सजा लो..."*

➳ ➳ *मैं आत्मा शांति कंड बन शांति की किरणों से सारे विश्व को

चमकाते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आत्मिक गुणो से सजधज कर अप्रतिम सौंदर्य से निखर उठी हूँ... *मीठे बाबा आपकी यादो में पवित्र बन, सुख और शांति के अखूट खजानो को पा रही हूँ...* आपकी प्यारी यादो में मैंने अपना खोया रंगरूप पुनः पा लिया है... सारे खजाने मेरी बाँहों में मुस्करा उठे है..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बुद्धि किसी भी कर्म में मलीन ना हो, इसका ध्यान रखना है*"

➳ _ ➳ अपने बुद्धि रूपी बर्तन को ज्ञान और योग से स्वच्छ बनाने के लिए मैं आत्मा *अपनी बुद्धि का कनेक्शन बुद्धिवानो की बुद्धि अपने शिव पिता के साथ जोड़ने के लिए, अपने सम्पूर्ण ध्यान को देह और देह की दुनिया से जुड़ी हर चीज से हटाकर केवल अपने स्वरूप पर और अपने शिव पिता परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ*। नश्वर देह के हर हिस्से से अपनी चेतना को समेट कर अब मैं भृकुटि सिहांसन पर विराजमान उस चैतन्य शक्ति को देख रही हूँ जो इस शरीर को चला रही है। *वो ऊर्जा का अखण्ड स्त्रोत मैं आत्मा हूँ जो इस शरीर रूपी रथ पर बैठ 84 जन्मो का अविनाशी पार्ट बजा रही है*।

➳ _ ➳ उस चैतन्य शक्ति को, अपने सत्य स्वरूप को मैं आत्मा अब अपने मन बुद्धि रूपी नेत्रों से देख रही हूँ। मेरा यह सत्य स्वरूप मुझे अपने अंदर निहित सर्वगुणों और सर्वशक्तियों की अनुभूति करवा रहा है। *मुझ आत्मा के अंदर समाहित सातों गुण और अष्ट शक्तियाँ अलग - अलग रंगों की अलग - अलग किरणों के रूप में मुझ चैतन्य सितारे से निकल कर चारों ओर फैल रहें हैं*। ये किरणे मुझे इन गुणों और शक्तियों का अनुभव करवाकर असीम सुकून प्रदान कर रही हैं।

➳ _ ➳ अपने इन गुणों और शक्तियों की किरणों को चारों ओर फैलाते हुए *अब मैं आत्मा भृकुटि सिहांसन को छोड़ ज्ञान, गुण और शक्तियों के सागर अपने शिव पिता के पास जा रही हूँ* जिन्हों ने मुझे ये सत्य ज्ञान दे कर, मेरे अंदर निहित गुणों और शक्तियों से मुझे अवगत करवा कर इस रूहानी यात्रा पर चलना सिखाया।

➳ _ ➳ यही सुंदर विचार करती अपने शिव पिता से मिलने की लगन में मग्न मैं आत्मा अपने प्यारे बाबा के अनुपम प्यार को स्वयं में समाए अब पाँच तत्वों की बनी इस साकारी दुनिया को पार कर जाती हूँ और *इन स्थूल सितारों की दुनिया से ऊपर, सूक्ष्म लोक से भी परें चैतन्य सितारों की उस सुंदर लुभावनी दुनिया मे प्रवेश कर जाती हूँ जहां मेरे शिव पिता रहते हैं*। निराकारी आत्माओं की यह निराकारी दुनिया परमधाम मुझ आत्मा का और मेरे पिता परमात्मा का घर है। इस स्वीट साइलेन्स होम में आ कर मैं गहन शांति की अनुभूति में खो जाती हूँ। *इस शांतिधाम में शांति के सागर शिव पिता से निकल रहे शांति के गहन वायब्रेशन चारों ओर फैले हुए हैं*।

➳ _ ➳ शांति की गहन अनुभूति करते - करते अब मैं आत्मा अपने शिव पिता के समीप जा रही हूँ। बाबा की सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे बैठ, शक्तियों की किरणों की मीठी फुहारों का मैं आनन्द ले रही हूँ। *इन शीतल फुहारों की शीतल बूंदें मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की कट को उतार कर मेरे बुद्धि रूपी बर्तन को स्वच्छ बना रही हैं। मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की मैल जैसे - जैसे उतर रही है वैसे - वैसे मेरी बुद्धि शुद्ध और पावन बनती जा रही है*। मुझ आत्मा का बुद्धि रूपी बर्तन सच्चे सोने के समान चमकदार बनने लगा है।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता की सर्वशक्तियों की किरणों की फुहारों से अपने बुद्धि रूपी बर्तन की सफाई करके अब मैं आत्मा फिर से कर्म करने के लिए परमधाम से वापिस अपनी कर्मभूमि पर लौट रही हूँ। *सूक्ष्म वतन से होती हुई, आकाश से नीचे वापिस पाँच तत्वों की बनी उसी साकारी दुनिया में अब मैं प्रवेश कर रही हूँ जहाँ मुझे अपने साकारी शरीर रूपी रथ का आधार ले कर अपना पार्ट परा करना है*।

➳ _ ➳ अपने साकारी तन में अब मैं आत्मा भृकुटि पर विराजमान हूँ और अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित रहते हुए अपने इस इस संगमयुगी ब्राह्मण जन्म का अद्भुत पार्ट बजा रही हूँ। *अपने संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप को सदा स्मृति में रख अब मैं इस बात का विशेष ध्यान रखती हूँ कि बुद्धि किसी भी कर्म में मलीन ना हो*। हर कर्म बाबा की याद में रह कर करते हुए अपने हर कर्म को मैं श्रेष्ठ बना रही हूँ।

➳ _ ➳ *खाते - पीते, चलते - फिरते, सोते - उठते हर समय बुद्धि का योग केवल अपने शिव पिता के साथ जोड़े, उनकी छत्रछाया को सदा अपने ऊपर अनुभव करते, हर कर्म में अपने शिव पिता को साथी बना कर, अपने हर कर्म की श्रेष्ठता द्वारा मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी परमात्म प्यार और पालना का अनुभव करवा सहज ही रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं मन्सा-वाचा-कर्मणा व सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्रता की धारणा रखने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं परमपूज्य आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव सम्पूर्णता की स्थिति में स्थित रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अपने भविष्य को स्पष्ट देखती वा जानती हूँ ।*
✺ *मैं संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा बच्चों को कहते हैं - *सर्व शक्तियों का वर्सा इतना शक्तिशाली है जो कोई भी समस्या आपके आगे ठहर नहीं सकती है*। समस्या-मुक्त बन सकते हो। *सिर्फ सर्व शक्तियों को इमर्ज रूप में स्मृति में रखो और समय पर कार्य में लगाओ*। इसके लिए अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखो। *जितनी बुद्धि की लाइन क्लीयर और क्लीन होगी उतना निर्णय शक्ति तीव्र होने के कारण जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता है वह कार्य में लगा सकेंगे*। क्योंकि समय के प्रमाण बापदादा हर एक बच्चे को विघ्न-मुक्त, समस्या-मुक्त, मेहनत के पुरुषार्थ-मुक्त देखने चाहते हैं। बनना तो सब को है ही लेकिन बहुतकाल का यह अभ्यास आवश्यक है।

➳ _ ➳ फालो करना तो सहज है ना! जब फालो ही करना है तो क्यों, क्या, कैसे...
यह समाप्त हो जाता है। और सबको अनुभव है कि व्यर्थ संकल्प के निमित्त यह क्यों, क्या, कैसे... ही आधार बनते हैं। फालो फादर में यह शब्द समाप्त हो जाता है। कैसे नही, ऐसे। बुद्धि फौरन जज करती है ऐसे चलो, ऐसे करो। तो बापदादा आज विशेष सभी बच्चों को चाहे पहले बारी आये हैं, चाहे पुराने हैं, यही इशारा देते हैं कि *अपने मन को स्वच्छ रखो। बहुतों के मन में अभी भी व्यर्थ और निगेटिव के दाग छोटे बडे हैं। इसके कारण पुरुषार्थ की श्रेष्ठ स्पीड.

तीव्रगति में रूकावट आती है।* बाप दादा सदा श्रीमत देते हैं कि *मन में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ -कामना रखो - यह है स्वच्छ मन। अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखना - यह है स्वच्छ मन।* स्वयं के प्रति वा अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आना - यह स्वच्छ मन नहीं है। तो *स्वच्छ मन और क्लीन और क्लीयर बुद्धि।* जज करो, अपने आपको अटेन्शन से देखो, ऊपर-ऊपर से नहीं, ठीक है, ठीक है। नहीं, सोच के देखो - मन और बुद्धि स्पष्ट है, श्रेष्ठ है? तब डबल लाइट स्थिति बन सकती है। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है। और यह अभ्यास अन्त में नही, बहुत काल का आवश्यक है।

✺ *ड्रिल :- "समस्या मुक्त बनने के लिए बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर रखना"*

➳ _ ➳ *मन बुद्धि के पंख लगाये मैं आत्म पंछी आहिस्ता आहिस्ता इस देह से अलग होने का अभ्यास करता हुआ*... देह से दूर स्थिर होकर मैं अपनी ही देह को साक्षी भाव से देख रहा हूँ... कुछ ही पल में इससे विदाई लेता हुआ मैं उड चला अनन्त की ओर... *मैं फरिश्ता चार धाम की यात्रा पर... बैठ गया हूँ शान्ति स्तम्भ पर... शिव बिन्दु आज मेरे सम्मुख अपने विराट रूप में*... मुझमें शक्तियों को भरते हुए... प्रकाश का घेरा मेरे चारों ओर... गहरा लाला प्रकाश और दूधिया रंग की आभा से सजा मैं फरिश्ता... *मुझसे, मेरे जैसे ही आठ फरिश्ते प्रकट होकर मेरे चारों ओर मुझे घेर कर खडे हो गये है... उनके चारों ओर प्रकाश से झिलमिलाती आठ दिव्य शक्तियाँ... एक एक फरिश्ते के भीतर समाती हुई... और भी शक्तिशाली रूप धारण कर ये फरिश्ते एक एक कर मुझ फरिश्ते में समातें जा रहे है*... अष्ट शक्तियों के वर्से से भरपूर होकर मैं फरिश्ता... बेहद की शक्तियों का प्रस्फुटन महसूस कर रहा हूँ स्वयं के भीतर से...

➳ _ ➳ उडता हुआ मैं फरिश्ता जा बैठा हूँ एक ऊँचे शिखर पर... सभी कुछ बहुत छोटा महसूस हो रहा है मेरी स्थिति के आगे... *विस्तार लिए फैले गगन के समान विस्तृत होता मेरा मन... और इसमे समाँ गयी है विश्व की हर आत्मा गगन की गोद में पलते तारों के समान... और हर आत्मा के प्रति

शुभकामना और शुभभावना की किरणें भेजता हुआ मैं... व्यर्थ और नैगेटिव संकल्प टूटते तारों के समान मेरे मन रूपी आकाश से विदाई ले रहे है*...

➳ _ ➳ शिखर से बहता पावन झरना और झरने के निरन्तर बहाव से तलहटी में बनी झील... *मेरे मन रूपी झील की ही तरह पावनता से भरपूर है... झील की तलहटी व किनारों पर जमी समस्या रूपी शैवाल... निरन्तर बहते झरने के बहाव से पानी की धारा के साथ दूर और दूर होती हुई जा रही है*... निरन्तर बहता शिव प्यार का झरना... पावनता का झरना... ये शक्तियों और गुणों का झरना... और इस झरने के नीचे मगन रूप में मै फरिश्ता... *बुद्धि की लगन बस एक शिव पिता से... मेरे मन रूपी स्वच्छ पावन झील में उभरता शिव का प्रतिबिम्ब*.... जैसे ठहरे शान्त और स्वच्छ जल में उभरता चाँद का पूरा प्रतिबिम्ब... हर समस्या बहते पानी के साथ, बहती शैवाल के समान दूर हो रही है... समस्या से मुक्त होकर मैं अब समाधान स्वरूप बनती जा रही हूँ... *बुद्धि रूपी प्यालें में शिव स्नेह की मधुशाला*... समस्या ले रही विदाई... पग पग पर बस जीत का उजाला...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔